वेयणाभागाभागविहाणाणुयोगद्दारं

वेयणाभागाभागविहाणे त्ति ॥ १ ॥

एदमहियारसंभालणसुत्तं सुगमं ।

तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि–पयडिअट्ठदा समयपबद्धट्ठदा खेत्तपच्चासे त्ति ॥ २ ॥

एवमेदाणि एत्थ तिण्ण चेव अणुयोगद्दाराणि होंति, अण्णेसिमसंभवादो ।

पयडिअट्ठदाए णाणावरणीय–दंसणावरणीयस्स कम्मस्स पयडीओ सव्वपयडीणं केवडियो भागो ? ॥ ३ ॥

किं संखेज्जदिभागो किमसंखेज्जदिभागो किमणंतिमभागो त्ति भणिदं होदि ।

दुभागो देसूणो ॥ ४ ॥

तं जहा–ओहिणाणावरणीयपयडीओ ओहिदंसणावरणीयपयडीओ च पुध पुध असंखेज्जलोगमेत्ता होदूण अण्णोण्णं पेक्खिदूण समाणाओ, सव्वोहिणाणवियप्पाणं ओहि–दंसणपुरंगमत्तुवलंभादो । मदिणाणावरणीयपयडीओ चक्खु–अचक्खुदंसणावरणीयपय–

....

अब वेदनाभागाभागविधान अनुयोगद्वार का अधिकार है ॥ १ ॥

यह अधिकारका स्मरण करानेवाला सूत्र सुगम है ।

उसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं–प्रकृत्यर्थता, समयप्रबद्धार्थता और क्षेत्रप्रत्यास ॥२॥

इस प्रकार यहाँ ये तीन ही अनुयोग द्वार हैं, क्योंकि, इनसे अन्य अनुयोगद्वार यहाँ सम्भव नहीं है ।

प्रकृत्यर्थतासे ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्मकी प्रकृतियाँ सब प्रकृतियोंके कितने भाग प्रमाण हैं ? ॥ ३ ॥

ये क्या संख्यातवें भाग प्रमाण हैं, क्या असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं या क्या अनन्तवें भाग प्रमाण हैं, यह इस सूत्र का अभिप्राय है ।

वे सब प्रकृतियोंके कुछ कम द्वितीय भाग प्रमाण हैं ॥ ४ ॥

यथा–अवधिज्ञानावरणकी प्रकृतियाँ और अवधिदर्शनावरणकी प्रकृतियाँ पृथक् पृथक् असंख्यात लोक प्रमाण होकर परस्परकी अपेक्षा समान हैं, क्योंकि, अवधिज्ञानके सब भेद अवधि–दर्शनपूर्वक पाये जाते हैं । मतिज्ञानावरणीयकी प्रकृतियाँ और चक्षु व अचक्षु दर्शनावरणीयकी

डीओ च पुध पुध असंखेज्जलोगमेत्ताओ[1] होदूण अण्णोण्णं पेक्खिदूण समाणाओ, सव्वस्स मदिणाणस्स दंसणपुरंगमत्तब्भुवगमादो । सुदणाणावरणीयपयडीयो असंखेज्जलोगमेत्ताओ। मणपज्जयणाणावरणीयपयडीओ असंखेज्जकप्पमेत्ताओ[2] । एदासिं सुदमणपज्जयणाणावरणीयपयडीणं ण दंसणमत्थि, मदिणाणपुरंगमत्तादो । तेण दंसणावरणीयपयडीहिंतो णाणावरणीयपयडीओ विसेसाहियाओ । केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जदिभागमेत्तो । किं तु मदिणाणे सुदणाणं पविसदि त्ति एत्थ पुध ण घेत्तव्वं, अण्णहा देसूणदुभागत्ताणुववत्तीदो। अधवा, सुद-मणपज्जयणाणाणं[3] पि दंसणमत्थि, तदवगयत्थसंवेयणाए तत्थ वि उवलंभादो। ण पुव्वब्भुवगमेण विरोहो[4], तक्कारणीभूददंसणस्स तत्थ पडिसेहविहाणादो । केवलदंसणस्स एक्का पयडी अत्थि । केवलणाणावरणीयस्स वि एक्का चेव । तेण ताओ सरिसाओ। णिद्दाणिद्दा पयलापयला थीणगिद्धी णिद्दा य पयला य एदाओ पंच पयडीओ दंसणावरणीए अत्थि । किं तु एदाओ अप्पहाणाओ, मणपज्जयणाणावरणीयपयडीणमसंखेज्जदिभागत्तादो। तदो सिद्धं दंसणावरणीयपयडीहिंतो णाणावरणीयपयडीओ बहुगाओ त्ति ।

असादावेयणीयादिसेसपयडीओ दंसणावरणीयपयडीणं असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होदूण मणपज्जयणाणावरणीयपयडीहिंतो असंखेज्जगुणाओ । कधमसंखेज्जगुणत्तं

....

प्रकृतियाँ पृथक् पृथक् असंख्यात लोकमात्र होकर अन्योन्यकी अपेक्षा समान हैं, क्योंकि, समस्त मतिज्ञानको दर्शनपूर्वक स्वीकार किया गया है । श्रुतज्ञानावरणीयकी प्रकृतियाँ असंख्यात लोकमात्र हैं । मन:पर्ययज्ञानावरणीयकी प्रकृतियाँ असंख्यात कल्प मात्र हैं । इन श्रुतज्ञानावरणीय और मन:पर्ययज्ञानावरणीय प्रकृतियोंका दर्शन नहीं होता, क्योंकि, ये ज्ञान मतिज्ञानपूर्वक होते हैं । इसलिए दर्शनावरणीयकी प्रकृतियोंकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी प्रकृतियाँ विशेष अधिक हैं । विशेषका प्रमाण कितना है ? वह असंख्यातवें भागमात्र है । किन्तु मतिज्ञानमें चूँकि श्रुतज्ञान प्रविष्ट है अतएव यहाँ पृथक् ग्रहण नहीं करना चाहिये, अन्यथा ज्ञानावरण और दर्शनावरणकी प्रकृतियाँ सब प्रकृतियोंके कुछ कम द्वितीय भाग प्रमाण नहीं बन सकतीं ।

अथवा, श्रुतज्ञान और मन:पर्ययज्ञानोंके भी दर्शन हैं, क्योंकि, उसके द्वारा अवगत अर्थका संवेदन वहाँ भी पाया जाता है । ऐसा स्वीकार करनेपर पूर्व मान्यताके साथ विरोध होगा, सो भी नहीं है; क्योंकि, उनके कारणीभूत दर्शनके प्रतिषेधका वहाँ पर विधान किया गया है ।

केवलदर्शनावरणीयकी एक प्रकृति है । केवलज्ञानावरणीयकी भी एक ही प्रकृति है । इसलिये वे दोनों समान हैं । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, निद्रा और प्रचला, ये पाँच प्रकृतियाँ दर्शनावरणीयकी हैं । किन्तु वे अप्रधान हैं, क्योंकि, वे मन:पर्ययज्ञानावरणीय प्रकृतियोंके असंख्यातवें भागमात्र हैं । इससे सिद्ध है कि दर्शनावरणीयकी प्रकृतियोंकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी प्रकृतियाँ बहुत हैं ।

असातावेदनीय आदि शेष कर्मोंकी प्रकृतियाँ दर्शनावरणकी प्रकृतियों के असंख्यातवें भाग

....

(१) अ-आ-काप्रतिषु 'लोगमेत्ता' इति पाठः । (२) ताप्रतौ 'असंखेज्जकम्ममेत्ताओ' इति पाठः ।
(३) अ-आ-काप्रतिषु 'मणपज्जवाणं' इति पाठः । (४) अ-आ-काप्रतिषु 'विरोहा' इति पाठः ।

णव्वदे ? णाणावरणीय-दंसणावरणीयपयडीओ सव्वपयडीणं दुभागो देसूणो त्ति सुत्तण्णहाणुववत्तीदो ।

संपहि णाणावरणीयसव्वपयडीहि अट्ठकम्मपयडिपुंजे भागे हिदे सादिरेयदोरूवाणि लब्भंति । सादिरेगपमाणमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागो । तं जहा-णाणावरणीयपयडीसु अट्ठकम्माणं सव्वपयडिपुंजादो अवणिदासु एगा अवहारसलागा लब्भदि (१) । संपहि अवसेसाओ[1] दंसणावरणीयादिसत्तकम्मपयडीओ अत्थि । पुणो तत्थ असादावेयणीयादिसेसपयडीसु पंचरूवूणमणपज्जयणाणावरणीयपयडीओ घेत्तूण दंसणावरणीयपयडीसु पक्खित्ते पक्खित्तपयडीहि सह दंसणावरणीयपयडीओ णाणावरणीयपयडीहि सरिसाओ होंति । अवणिदे बिदिया अवहारकालसलागा लब्भदि (२) । पुणो गहिदावसेसासु[2] पयडीसु णाणावरणीयपयडिपमाणेण कीरमाणासु एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो अवहारो उवलब्भदे, णाणावरणीयस्स पयडीसु जदि एगा अवहारकालसलागा लब्भदि तो गहिदसेसपयडीसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो । एदेहि सादिरेगदोरूवेहि सव्वपयडीसु ओवट्टिदासु

....

मात्र होकरके मन:पर्ययज्ञानावरणीयकी प्रकृतियोंसे असंख्यातगुणी हैं ।

शंका - वे उनसे असंख्यातगुणी हैं, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान - 'ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीयकी प्रकृतियाँ सब प्रकृतियोंके द्वितीय भागसे कुछ कम हैं' इस सूत्रकी अन्यथानुपपत्तिसे वह जाना जाता है ।

अब ज्ञानावरणीयकी सब प्रकृतियोंका आठ कर्मोंके प्रकृतिपुंजमें भाग देनेपर साधिक दो रूप पाये जाते हैं । साधिकताका प्रमाण एक अङ्क का असंख्यातवाँ भाग है । वह इस प्रकारसे- आठ कर्मोंकी सब प्रकृतियोंके समूहमेंसे ज्ञानावरणीयकी प्रकृतियोंको कम कर देनेपर एक अवहारशलाका पायी जाती है (१)। अब अवशेष रूपसे दर्शनावरणीय आदि शेष कर्मोंकी प्रकृतियाँ रहती हैं । फिर उन आसातावेदनीय आदि शेष कर्मोंकी प्रकृतियोंमेंसे पाँच अङ्कोंसे कम मनःपर्ययज्ञानावरणीयकी प्रकृतियोंको ग्रहणकर दर्शनावरणीयकी प्रकृतियोंमें मिला देनेपर मिलायी हुई प्रकृतियोंके साथ दर्शनावरणीयकी प्रकृतियाँ ज्ञानावरणीयकी प्रकृतियोंके सदृश होती हैं । (इन दर्शनावरणीयकी प्रकृतियोंके उक्त कर्म प्रकृतियोंमेंसे) कम कर देनेपर द्वितीय अवहारशलाका पायी जाती है (२) । फिर ग्रहण की गई प्रकृतियोंसे अवशिष्ट रहीं प्रकृतियोंकी ज्ञानावरणीयकी प्रकृतियोंके प्रमाणसे करने पर एक अंकका असंख्यतवाँ भागमात्र अवहार पाया जाता है, क्योंकि, ज्ञानावरणीयकी प्रकृतियोंमें यदि एक अवहारशलाका पायी जाती है तो ग्रहण की गई प्रकृतियोंसे शेष रही प्रकृतियोंमें कितनी अवहारशलाका पायी जाएगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अङ्कका असंख्यातवाँ भाग पाया जाता है । इन साधिक दो अङ्कोंसे सब प्रकृतियोंको अपवर्तित

....

(१) ताप्रतौ 'अवसेसादो (ओ)', इति पाठः ।

(२) अ-आ-काप्रतिषु 'गहिदावसेसाओ,' ताप्रतौ 'गहिदावसेसाओ (सु)' इति पाठः ।

णाणावरणीयपयडिपमाणं लब्भदि । एवं दंसणावरणीयस्स वि सादिरेगदोरूवमेत्तो भागहारो साहेयव्वो ।

वेयणीय-मोहणीय-आउअ-णामा-गोद-अंतराइयस्स कम्मस्स पयडीओ सव्वपयडीणं केवडियो भागो ? ।। ५ ।।

सुगमं ।

असंखेज्जदिभागो ।। ६ ।।

सग-सगपयडीहि सव्वपयडिसमूहे भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तरूवोवलंभादो । एवं पयडिअट्ठदा समत्ता ।

समयपबद्धट्ठदाए ।। ७ ।।

एदमहियारसंभालणसुत्तं सुगमं ।

णाणावरणीय-दंसणावरणीयस्स कम्मस्स एक्केक्का पयडी तीसं तीसं सागरोवमकोडाकोडीयो समयपबद्धट्ठदाए गुणिदाए सव्वपयडीणं केवडियाओ भागो ? ।। ८ ।।

एत्थ एवं सुत्तसंबंधो कायव्वो । तं जहा-तीसं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ समयपबद्धट्ठदाए गुणिदाए णाणावरणीय-दंसणावरणीयस्स कम्मस्स एक्केक्का पयडी

....

करनेपर ज्ञानावरणीयकी प्रकृतियोंका प्रमाण उपलब्ध होता है । इसी प्रकार दर्शनावरणीयके भी साधिक दो अङ्क मात्र भागहारको साध लेना चाहिये ।

वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय कर्मकी प्रकृतियाँ सब प्रकृतियोंके कितने भाग प्रमाण हैं ? ।। ५ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

वे उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।। ६ ।।

अपनी अपनी प्रकृतियोंका सब प्रकृतियोंके समूहमें भाग देनेपर असंख्यात लोकमात्र अङ्क पाये जाते हैं । इस प्रकार प्रकृत्यर्थता समाप्त हुई ।

समयप्रबद्धार्थताका अधिकार है ।। ७ ।।

यह अधिकारका स्मरण करानेवाला सूत्र सुगम है ।

तीस तीस कोडाकोडी सागरोपमोंकी समयप्रबद्धार्थता से गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतनी मात्र ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीयकी एक एक प्रकृति सब प्रकृतियोंके कितने भाग प्रमाण हैं ? ।। ८ ।।

यहाँ इस प्रकारसे सूत्रका सम्बन्ध करना चाहिये । यथा - तीस तीस सागरोपम कोडाको- डियोंको समयप्रबद्धार्थतासे गुणित करनेपर जो प्राप्त हो इतनी मात्र ज्ञानावरणीय और दर्शना-

एवडिया होदि । एवंविहाओ णाणावरणीय-दंसणावरणीयकम्मपयडीओ सव्वपयडीणं केवडिओ भागो त्ति संबंधो कायव्वो । सेसं सुगमं ।

दुभागो देसूणो ॥ ९ ॥

एत्थ सादिरेयदोरूवमेत्तभागहारो पुव्वं व साहेयव्वो, गुणगारकयभेदेण सह सादिरेय-दोरूवभागहारस्स विरोहाभावादो ।

एवं वेयणीय-मोहणीय-आउअ-णामा-गोद-अंतराइयाणं च णेयव्वं ॥ १० ॥

जहा णाणावरणीय-दंसणावरणीयाणं समयपबद्धट्ठदं सग-सगउक्कस्सट्ठिदीहि गुणेदूण पयडीणं पमाणपरूवणा कदा तहा एदेसिं कम्माणं सग-सगुक्कस्सबंधट्ठिदीहि बंधगद्धाहि य समयपबद्धट्ठदं गुणिय पयडिपमाणपरूवणा कायव्वा मंदमेहाविसिस्सबोहणट्ठं ।

णवरि विसेसो सव्वपयडीणं केवडिओ भागो ? ॥ ११ ॥

इदि पुच्छिदे ।

असंखेज्जदिभागो ॥ १२ ॥

त्ति भाणिदव्वं[1] । एदाहि समयपबद्धट्ठदापयडीहि सव्वपयडिसमूहे भागे हिदे

....

वरणीय कर्मकी एक एक प्रकृति होती है । इस प्रकारकी ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्मकी प्रकृतियाँ सब प्रकृतियोंके कितने भाग प्रमाण हैं, ऐसा सम्बन्ध करना चाहिये । शेष कथन सुगम है ।

वे उनके कुछ कम द्वितीय भाग प्रमाण हैं ॥ ९ ॥

यहाँ साधिक दो अंक मात्र भागहारको पहलेके समान सिद्ध करना चाहिये, क्योंकि, गुणकारकृत भेदके साथ साधिक दो अंक मात्र भागहारका कोई विरोध नहीं है ।

इसी प्रकार वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तरायके सम्बन्धमें जानना चाहिये ॥ १० ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीयकी समयप्रबद्धार्थताको अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितियोंसे गुणित कर प्रकृतियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे इन कर्मोंकी अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितियों और बन्धककालोंसे समयप्रबद्धार्थताको गुणित करके प्रकृतियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा मन्दबुद्धि शिष्योंके प्रबोधनार्थ करनी चाहिये ।

विशेष इतना है कि वे सब प्रकृतियोंके कितने भाग प्रमाण हैं ? ॥ ११ ॥

ऐसा पूछने पर ।

वे उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ १२ ॥

इस प्रकार कहलाना चाहिये, क्योंकि, इन समयप्रबद्धार्थता प्रकृतियोंका सब समूहमें भाग

....

(१) प्रतिषु 'त्ति भाणिदव्वं', सूत्रे सम्मिलितम् ।

असंखेज्जरूवोवलंभादो । एवं समयपबद्धट्ठदा समत्ता ।

खेत्तपच्चासे त्ति ॥ १३ ॥

एदमहियारसंभालणवयणं ।

णाणावरणीयस्स कम्मस्स एक्केक्का पयडी जो मच्छो जोयण-सहस्सियो सयंभुरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तडे अच्छिदो, वेयणस-मुग्घादेण समुहदो, काउलेस्सियाए लग्गो, पुणरवि मारणंतियसमुग्घादेण समुहदो, तिण्णि विग्गहकंडयाणि काऊण से काले अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उववज्जिहदि त्ति खेत्तपच्चासएण[1] गुणिदाओ सव्वपयडीणं केवडिओ भागो ? ॥ १४ ॥

जो मच्छो उववज्जिहदि त्ति एदेण खेत्तपच्चासो परूविदो । एदेण खेत्तपच्चासएण गुणिदाओ समयपबद्धट्ठदाओ पयडीओ णाणावरणीयस्स कम्मस्स एक्केक्का पयडी एवडिया होदि । पुणो एवंविहाओ णाणावरणीयस्स कम्मस्स पयडीओ सव्वपयडीणं केवडिओ भागो त्ति सुत्तसंबंधो कायव्वो । सेसं सुगमं ।

दुभागो देसूणो ॥ १५ ॥

....

देनेपर असंख्यात अंक पाये जाते हैं । इस प्रकार समयप्रबद्धार्थता समाप्त हुई ।

क्षेत्रप्रत्यास अनुयोगद्वारका अधिकार है ॥ १३ ॥

यह सूत्र अधिकारका स्मरण करानेवाला है ।

ज्ञानावरण कर्मकी एक एक प्रकृति–जो मत्स्य एक हजार योजन प्रमाण अवगाहनासे युक्त होता हुआ स्वयम्भूरमण समुद्रके बाहिरी तटपर स्थित है, वेदनासमुदघातको प्राप्त है, काकलेश्यासे संलग्न है, फिरसे मारणान्तिकसमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त है, तीन विग्रहकाण्डकोंको करके अनन्तर समयमें नारकियोंमें उत्पन्न होगा, इस क्षेत्रप्रत्याससे समयप्रबद्धार्थताप्रकृतियोंको गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतनी होती है । ये प्रकृतियाँ सब प्रकृतियोंके कितने भाग प्रमाण हैं ? ॥ १४ ॥

'जो मच्छो' यहाँसे लेकर 'उववज्जिहदि' तक इस सूत्र द्वारा क्षेत्रप्रत्यासकी प्ररूपणा की गई है । इस क्षेत्रप्रत्याससे गुणित समयप्रबद्धार्थता प्रकृतियाँ जितनी होती हैं इतनी मात्र ज्ञानावरणीय कर्मकी एक एक प्रकृति होती है । इस प्रकारकी ज्ञानावरणीय प्रकृतियाँ सब प्रकृतियोंके कितने भाग प्रमाण हैं, ऐसा सूत्रका सम्बन्ध करना चाहिये । शेष कथन सुगम है ।

वे कुछ कम उनके द्वितीय भाग प्रमाण हैं ॥ १५ ॥

....

(१) अप्रतौ 'पच्चासेएगुण', आ–का–मप्रतिषु 'पच्चासेएण', ताप्रतौ 'पच्चासेण' इति पाठः ।

(२) अ–आ–काप्रतिषु 'देसूणा' इति पाठः ।

कुदो ? एत्थतणगुणगारे सव्वपयडीणं संते वि सव्वपयडीओ णाणावरणीयपयडि-पमाणेण अवहिरिज्जमाणाओ सादिरेयदोरूवमेत्त[1] अवहारसलागुवलंभणिमित्ताओ होंति त्ति।

एवं दंसणावरणीय-मोहणीय-अंतराइयाणं ।। १६ ।।

एदेसिं कम्माणं जहा णाणावरणीयस्स खेत्तपच्चासपयडिपरूवणा कदा तहा भागाभागो च कायव्वो ।

णवरि मोहणीय-अंतराइयस्स सव्वपयडीणं केवडिओ भागो ? ।।१७।।

इदि पुच्छिदे-

असंखेज्जदिभागो ।। १८ ।।

कारणं सुगमं । वेयणीयस्स कम्मस्स पयडीओ[2]-

वेयणीयस्स कम्मस्स एक्केक्का पयडी अण्णदरस्स केवलिस्स केवलसमुग्घादेण समुहदस्स सव्वलोगं गयस्स खेत्तपच्चासएण गुणिदाओ सव्वपयडीणं केवडिओ भागो ? ।। १९ ।।

....

कारण कि सब प्रकृतियोंकी ज्ञानावरणीयकी प्रकृतियोंके प्रमाणसे अपहृत करनेपर वे साधिक दो अङ्क प्रमाण अवहारशलाकाओंकी उपलब्धिमें निमित्त होती हैं ।

इसी प्रकार दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय कर्मके सम्बन्धमें कहना चाहिये ।। १६।।

जिस प्रकारसे ज्ञानावरणीय कर्मकी क्षेत्रप्रत्यासप्रकृतियोंकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे इन तीन कर्मोंके भागाभागकी भी प्ररूपणा करनी चाहिये ।

विशेष इतना है-मोहनीय और अन्तरायकी प्रकृत प्रकृतियाँ सब प्रकृतियोंके कितने भाग प्रमाण हैं ? ।। १७ ।।

ऐसा पूछनेपर -

वे उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।। १८ ।।

इसका कारण सुगम है । अब वेदनीय कर्मकी प्रकृतियाँ बतलाते हैं -

केवलिसमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त होकर सर्व लोकको प्राप्त हुए अन्यतर केवलीके इस क्षेत्र प्रत्याससे समयप्रबद्धार्थकता प्रकृतियोंको गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतनी मात्र वेदनीय कर्मकी एक एक प्रकृति होती है । ये प्रकृतियाँ सब सप्रकृतियोंके कितने भाग प्रमाण हैं ? ।। १९ ।।

....

(१) अप्रतौ 'रूवमेत्तो', इति पाठः। (२) प्रतिषु 'वेयणीयस्स कम्मस्स पयडीओ' इति पाठः अनन्तरसुत्रे सम्मिलितम्।

सुगमं ।

असंखेज्जदिभागो ॥ २० ॥

सुगमं ।

एवमाउअ-णामा-गोदाणं ॥ २१ ॥

जहा वेयणीयस्स भागाभागो परूविदो तहा एदेसिं तिण्णं कम्माणं परूवेदव्वो ।

एवं खेत्तपच्चासए त्ति अणुओगद्दारे समत्ते वेयणाभागाभागविहाणे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

....

यह सूत्र सुगम है ।

वे उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ २० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

इसी प्रकार आयु, नाम और गोत्र कर्मके सम्बन्धमें कहना चाहिये ॥ २१ ॥

जिस प्रकार वेदनीय कर्मके भागाभागकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार इन तीन कर्मोंके भागाभागकी भी प्ररूपणा करनी चाहिये ।

इस प्रकार क्षेत्र प्रत्यास अनुयोगद्वारके समाप्त होनेपर वेदना भागाभागविधान
यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।